प्रातःक्लास 22-3-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

रिकार्ड:- इसपाप की दुनिया से:-

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों ने गीत सुना। बच्चे जानते हैं यह है पाप की दुनिया। पुरानी दुनिया है पाप की दुनिया। नई दुनिया होती है पुण्य की दुनिया। वहां पाप होता नहीं। वह है रामराज्य यह है रावण राज्य। सब से बड़ा ते बड़ा पाप है काम कटारी चलाना जो ही आदि मध्य अन्त दुःख देती है। तब तो सु पुकारते हैं हे पतित-पावन आओ हमको पावन बनाओ। सभी धर्म वाले पुकारते हैं। ओ गाडफादर आकर हमें लिबरेट करो। बाईड बनो। गोया बाप जब आते हैं तो जो भी धर्म है सारी सृष्टि में सभी को ले जाते हैं। इस समय सभी रावण राज्य में हैं। तो सभी धर्म वाले को ले जाते हैं। वापस शान्तिधाम। विनाश तो सभी को होना ही है। भारत, जहां बाप आते हैं उन्हों को ही सुखधाम का लायक बनाते हैं। जो भी बच्चे हैं इस सृष्टि में सभी का कल्याण करते हैं। इसलिए एक को ही सर्व सदगति दाता, सर्व का कल्याण करने वाला कहा जावेगा। बाप कहते हैं अभी तुमको वपास जाना है। सभी धर्म वालो को शान्तिधाम वा निर्वाणधाम जाना है। जहां सभी आत्मायें शान्ति में रहती है। बेहद का बाप जो रचयिता है वह आकर सभी धर्म वालों को मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। तो महिमा भी उस एक गाड-फादर की गानी चाहिए। जो आकर सभीकी सेवा करते हैं। उनको ही याद करना चाहिए। बाप खुद समझते हैं मैं दूर देश परम धाम के रहने वाला हूं। इसलिए मुझे परमपिता कहते हैं। मुझे पुकारते हैं इसलिए मैं आता हूं। जो भी बच्चे हैं सभी को ले जाता हूं। सब से पहले जो प्राचीन देवी-देवता धर्म था वह अभी नहीं हैं। हिन्दु तो धर्म नहीं है। असल हैं ही देवी देवता धर्म। परन्तु पवित्र न होने कारण अपन को देवता कहने बदलीहिन्दु कह दिया है। हिन्दु धर्म स्थापन करने वाला तो कोई है नहीं। गीता है ही सर्व शास्त्र मई शिरोमणी। भगवान के गाये हुये हैं। भगवान एक को ही कहा जाता है। गाड-फादर। कृष्णको वा ल०ना०को कब गाडफादर -पतित-पावन नहीं कहेंगे। यह तो राजा-रानी है। इन्हों को ऐसा किसने बनाया। बाप ने। बाप पहले2 नई दुनिया रचते हैं। जिसके वहीं मालिक बनते हैं। कैसे बने हैं यह कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जानते। बड़े2 लखपति मंदिर आद बनाते हैं उन्हों से पूछना चाहिए इन्हों ने यह विश्व का राज्य कैसे लिया। कैसे मालिक बने। कब कोई बता न सकेंगे। क्या कर्म किये जो इतना फल पाया। अभी बाप बैठ समझाते हैं तुम अपने धर्म को भूल गये हो। आदी सनातन देवी-देवता धर्म को न जानने के कारण सभी और2 धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं। वह फिर रिटर्न होंगे अपने धर्मों में। जो आदी सनातन देवी-देवता धर्म के हैं वह फिर इस अपने ही धर्म में आवेंगे। क्रिश्चन धर्म का होगा तो फिर क्रिश्चन धर्म में जावेगा। यह अभी आदी सनातन देवी देवता धर्म का सैपलिंग लग रहा है। जो 2 जिस धर्म का है उनको अपने ही धर्म में आना पड़ेगा। यह झाड़ है। इनके तीन तीन ट्युब्स हैं। फिर एन से वृधि होते जाते हैं। और कोई यहनालेज दे न सके इस विराट झाड़ की। अभी बाप समझाते हैं तुम अपने धर्म में आ जाओ। कोई कहते हैं हम सन्यास धर्म में जाता हूं। रामकृष्ण परमहंस सन्यासी का फालोअर हूं। अभीवह तो हैं निवृति मार्ग वाले। तुम हो प्रवृति मार्ग वाले। वह धर्म ही बिलकुल अलग हैं। अभी प्रवृति मार्ग वाले निवृति मार्ग वालों के पास जाते हैं वह तो बिलकुल रांग हैं। गृहस्थी फिर निवृति मार्ग वालों के फालोअर कैसे बन सकते हैं। अनेक प्रकार के सन्यास हैं। जिनके फालोअर बने हैं। अभी उन निवृति मार्ग वालों की तो धर्म ही अलग हैं। तुम पहले2 प्रवृति-मार्ग में पवित्र थे। फिर रावण द्वारा तुम अपवित्र बने हो। अभी फिर यह बातें सन्यासी नहीं जानते हैं। बाप समझाते हैं तुम हो गृहस्थ-आश्रम के। भक्ति भी तुमको करनी है। बाप आकर भक्ति का फल सदगति देते हैं। जो पवित्र मार्ग के थे वही अपवित्र मार्ग बने हैं। वह धर्म बिलकुल अलग हैं। शंकराचार्य आद सभीपीछे आते हैं। 2500वर्ष बाद शंकराचार्य सन्यास धर्म स्थापन किया। वह है निवृति मार्ग। तुम हो प्रवृति मार्ग वाले। फिर तुम कैसे कहते हो कि हम फलाने के फालोअर हैं। फालोअर तब कहा जाये जब तुम भी कफनीपहनो। माथा मुंडो। गृहस्थी अपनको सन्यासी का फालोअर कहलाये तो यह तो रांग है। दुनिया में जो भी होता है वह तो इनराईटियस इनसालवेन्ट है।

अनलॉफुल। राजा कोई है नहीं। इनको सायन्टी नहीं कहा जाता। इनको कहा जाता है अनराईटियस इरीलिजीयस। अनलॉफुल* इमप्युर। अगेन्सट है ना। कहा भी जाता है रिलीजन ईज माईट। बाप रिलीजन स्थापन करते हैं। तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो। बाप से तुमको कितनी माईट मिलती है। एक सर्वशक्तिवान बाप ही आकर सभी को शक्ति देते हैं। सर्व की सदगति करते हैं। और कोई सदगति देने वाला है नहीं। न कोई सदगति पा सकते हैं। न दे सकते हैं। यहां ही वृधि को पाते रहते हैं। वापस कोई जा नहीं सकता। सदगति दाता है ही एक। बाप कहते हैं मैं सभी धर्मों का सर्वेन्ट हूं। आकर सभी को सदगति करता हूं। सदगति कहा जाता है सत-युग को। मुक्ति है शान्तिधाम। फादर आते हैं तो आकर सभी धर्मों की सदगति करते हैं। तो सब से बड़ा कौन हुआ। बाप कहते हैं हे आत्मायें तुम सभी ब्रदर्स हो। ब्रदर्स को बाप से वर्सा मिलता है। आकर सभी को अपने2 सेक्शन में भेज देने लायक बनाता हूं। लायक नहीं बनते हैं तो फिर सज़ा खाते हैं। सज़ायें खाकर हिसाब-किताब चुकतु कर वापस चले जाते हैं। तो यह है शान्तिधाम वह है सुखधाम। बापकहते हैं मैं आकर न्यु वर्ल्ड स्थापन करता हूं। इसमें मेहनत करनी पड़ती है। बिलकुल ही अजामिल जैसे पापात्माओं को आकर ऐसा बनाता हूं। जब से तुम वाममार्गx में गये हो तब से सीढ़ी नीचे उतरते आये हो। यह 84 जन्मों की सीढ़ी है उतरने की। सतोप्रधान से सतो, रजो तमो... अभी यह है संगम। बापकहते हैं मैं आता ही हूं एक बार। मैं कोई क्राइस्ट ईब्राहीम, बुध के तन में नहीं आता हूं। मैं पुरुषोत्तम संगम युग पर ही आता हूं। वह लोग तो कह देते परमात्मा सभी में व्यापक है। सर्व-व्यापी है। यह सभी हैं झूठ। इनको कहा ही जाता है झूठ-खण्ड। भारत सच्च-खण्ड था। तो भक्ति मार्ग में है अन्धश्रधा। ब्लाईन्ड-फेथ। सन्यासी का फालोअर सन्यासी ही होंगे या गृहस्थी। अभी कहा जाता है फालो -फादर। बाप कहते हैं तुम सभी आत्माओं को मेरे को फालो करना है। मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। इसको कहा जाता है योग-अग्नि। तुम हो सच्चे2 ब्राह्मण। वह ब्राह्मण लोग तो कोस करने लिए हथियाला बांधते हैं। तुम फिर वह तोड़ते हो। काम-चिक्षासे उतर ज्ञान-चिक्षा पर बैठो। वह विष्टा के कीड़े हैं। उनको तुम निकाल ज्ञान की भूं2 करते हो। वह है गन्द खानेवाले। नानक ने भी कहा है असंख्य चोर अ हराम खोर... मनुष्य के लिए ही कहा है। यह एक ही बाप बैठसमझाते हैं। क्राईस्ट बुध, नानक आद सभी एक को ही याद करते हैं। सभी का फादर वह एक ही है। परन्तु उनको कोई भी जानते नहीं। अभी तुम आस्तिक बने हो। रचयिता और रचना को तुम ने अभी रचयिता बाप दवारा जाना है। ऋषि-मुनि आद सभी कहते थे नेती-नेती। हम नहीं जानते -तो गोया नास्तिक ठहरे ना। सभी हैं आरफन्स। कितना लड़ते-झगड़ते हैं। स्वर्ग में कब लड़ाई-झगड़ा आद होती नहीं। वह है ही सच्च-खण्ड। दुःख का नाम नहीं। यहां आरफन्स होने कारण कितना दुःख है। आयु भी बहुत छोटी है। देवताओं की आयु कितनी बड़ी थी। वह हैं पवित्र योगी। यहां हैं अपवित्र भोगी। कितना फर्क है। सीढ़ी उतरते आयु कमती हो ही जाती है। अकाले मृत्यु भी होती रहती है। बाप तुमको काल पर जीत पहनाते हैं। वहां अकाले मृत्यु होता ही नहीं। बाप तुमको ऐसा बनाते हैं जो तुम 2। जन्म कब रोगी नहीं बनेंगे। तो ऐसे बाप से वर्सा लेना चाहिए ना। आत्मा को कितना समझदार बनना चाहिए। बाप हमको बेहद का वर्सा देसादेते हैं जहां कोई दुःख होता ही नहीं। तुम्हारा चिल्लाना करना बन्द हो जाता है। कुछ भी हो जाये रोने की बात नहीं। पार्ट-धारी है एक शरीर छोड़ दूसरा लिया। यह बना बनाया ड्रामा है। बाबा ने कर्म-विकर्म अकर्म की गति भी समझाई है। कृष्ण की आत्मा अभी 84 जन्म भोग फिर अन्त में वह ज्ञानसुन रही है। जो सुन रहे हैं उनको सुनाने वाला बना दिया है। गीता का खण्डन करने से सभी शास्त्र खण्डन हो गये हैं। यह शास्त्रआदसभी हैं भक्ति मार्ग के। और ज्ञान और भक्ति। ज्ञान है दिन। भक्ति है रात। दिन रात किसका? ब्रहमा के और ब्राह्मणों को। अभी तुम्हारा दिन होने का है। महाशिवरात्रि कहते हैं ना। रात्रि अर्थात भक्ति मार्ग का अन्त है। ज्ञान मार्ग शुरु होता है। रात है असुरों की, दिन है देवताओं का। अभी है संगम

अभी फिर से स्वर्गवासी बन रहे हो। वह अंधियारे रात में भक्ति मार्ग में धक्के खाते रहते हैं। टिपर भी घीसती जाती है। पैसे भी खलास हो जाते हैं। बाप कहते हैं मीठे बच्चों-अभी मैं आया हूं तुमको शान्तिधाम सुखधाम ले जाने लिए। तुम सुखधाम के रहवासी थे फिर 84 जन्मों के बाद दुःखधाम में आकर पड़े हो। पुकारते हो बाबाआओ इस पुरानी दुनिया में। यह तुम्हारी दुनिया तो नहीं है। अभी तुम क्या कर रहे हो। योगबल से अपनी दुनिया स्थापन कर रहे हो। कहा भी जाता है अहिंसा परमो देवी-देवता धर्म। तुमको अहिंसक बनना है। न काम कटारी चलानी है, न लड़ना-झगड़ना है। बाप कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद आता हूं। यह कल्प है ही 5000 वर्ष का। लाखों वर्ष की बात ही नहीं। फिर तो यहां बहुत आदम शुमारी होती। कितनी गपोड़े लगाते हैं। इसलिए बाप कहते हैं यह यज्ञ तप-दान-पूण्य आद करते तुम ने दुर्गति को पाया है। ज्ञान से सदगति, भक्ति से दुर्गति कहा जाता है। कोई को सीधा कहो तो बिगर पड़ेंगे। पत्थर मारने लग पड़ेंगे। यह गांधी सिखला कर गये हैं। कितना तंग करते हैं। तो मनुष्य देखो कितना घोर अंधियारे में हैं। कुम्भ कर्ण के नींद में ऐसे सोये पड़े हैं जो जगते ही नहीं। इसलिए बाप कहते हैं मैं कल्प2 आता हूं। मेरा भी ड्रामा में पार्ट है। पार्ट बिगर मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूं। मैं भी ड्रामा के बन्धन में हूं। पूरे टाईम पर आता हूं। ड्रामा के प्रे पलैन अनुसार मैं तुम बच्चों को वापस ले जाता हूं। अभी कहता हूं मन्मनाभव। परन्तु इनका भी अर्थ कोई समझते नहीं। बाप कहते हैं देह के सभी सम्बन्ध को छोड़ मामेकं याद करो तो पावन बन जावेंगे। बच्चे मेहनत करते रहते हैं बाप को याद करने की। यह है ईश्वरीय विश्व-विद्यालय। सारे विश्व को सदगति देने वाला। दूसरा कोई ईश्वरीय विश्व-विद्यालय हो न सके। ईश्वर बाप खुद आकर सारे विश्व को चेंज करते हैं। हेल से हेविन बना देते हैं। जिस पर तुम राज्य करते हो। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो सतप्रधान बन जावेंगे। तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनते हो यह बेहद का बाप ही समझाते हैं। यह है भाग्यशाली रथ जिस में बाप आकर प्रवेश करते हैं। शिव जयन्ती को कोई भी जानते नहीं। वह तो कह देते परमात्मा नाम-रूप से न्यारा है। अरे नाम-रूप से न्यारा तो कोई चीज़ होती ही नहीं। यह आकाश है नाम है ना, है तो कुछ भी नहीं फिर भी नाम तो है ना। उनका भी कल्याणकारी नाम है। फिर भक्तिमार्ग में बहुत नाम रखे हैं। ईश्वर नाथ भी कहते हैं। क्योंकि वह आकर काम कटारी से छुड़ाये पावन बनाते हैं। भक्ति मार्ग में तो ही बहुत करते हैं। उनका निवृति मार्ग ही अलग है। वह ब्रह्म को मानते हैं उनको ही याद करते हैं। ब्रह्म योग तत्व योगी। वह तो हो गया रहने का स्थान। जिसको ब्रह्मण्ड कहा जाता है। वह फिर ब्रह्मा को भगवान समझ लेते हैं। समझते हम लीन हो जावेंगे। गोया आत्मा को मार्दिवुल बना देते हैं। बाप कहते हैं मैं ही आकर सर्वकी स दगति करता हूं। इसलिए एक शिव बाबा की ही जयन्ती हरे तूल्य है बाकी और सभीकी जयन्तियां कौड़ी तूल्य है? शिव बाबा ही सर्व की सदगति करते हैं तो वह है हीरे जैसा। फिर तुमको गोल्डेन एज में ले जाते हैं। तुम्हारा भी यह जन्म हीरे जैसा है। फिर गोल्डेन एज में आते हो। यह नालेज तुमको बाप ही आकर पढ़ाते हैं। जिस से तुम देवता बन ते हो। फिर यह नालेज प्रायः लोप हो जाती है। इन ड्रामा में रचता औररचना की नालेज नहीं है। बच्चों ने गीत सुना कहते हैं ऐसी जगह ले चलो जहां शान्ति चैन हो। वह है शान्तिधाम। फिर सुखधाम। वहां अकाले मृत्यु नहीं होती। ऐसे स्वर्ग के लिए भी क्या2 बातें लिख देते हैं। स्वर्ग में ऐसी बातें हो कैसे सकती। भगवान को भी ठिकर-भिकर में कह गाली देते हैं। तो खुद ही पत्थर बुधि बन पड़े हैं फिर बाप आकर पत्थर भितर बुधि से पारस बुधि बनाते हैं। अच्छा मीठे3 फिलधे बच्चों प्रिंट स्हानी बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। मीठे2 सिकीलधे बच्चों को स्हानी बाप का नमस्ते।

हलो सर्व सेन्टर निवासी ब्राह्मण कुल भूषणों प्रिंट मधुबन निवासियों का मधुर प्यार भरी याद स्वीकार करना जी हो।

-:: शिव बाबा शद है?::-

-:: ओमशान्ति::-